युवा जीवन

फरवरी 2024

चाहे मैं कितनी भी बार उसके
प्रेम का तिरस्कार करूं और भटक
जाऊं, मेरे लिए उसका प्रेम अभी भी एक

अद्भुत प्रेम है

भूमिका

प्रिय युवाओं को हार्दिक शुभकामनाएँ!

जब लोग प्रेम के बारे में सोचते हैं तो केवल एक चीज जो दिमाग में आती है वह है एक पुरुष और एक स्त्री का प्रेम। कई पीढ़ियों और युगों 0से, यह प्रेम कई तरीकों से व्यक्त किया गया है। हालाँकि यह सारा प्रेम और स्नेह कई दर्दनाक परिणाम लाता है, फिर भी आज भी, यह मानवीय प्रेम ही है जिसे श्रेष्ठ कहा जाता है, सराहा जाता है और जिसकी प्रशंसा की जाती है। इन सभी प्रेमों से ऊपर एक प्रेम है। यह अद्भुत, अथाह प्रेम है।

वह प्रेम अद्भुत है क्योंकि...

नहीं जानता है

- वह प्रेम भूलना नहीं जानता - चाहे मैं उसके प्रेम को कितनी ही बार भूल जाऊं और दूर चला जाऊं, वह मुझे याद रखता है और मुझ पर स्थिर रहता है।
- वह प्रेम मुझे नीचा दिखाना नहीं जानता; इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि मैं कितनी अभिमानपूर्वक उसकी उपेक्षा करता हूँ, पाप के कीचड़ में लोटता हूँ, अपने पवित्र जीवन में लड़खड़ाता हूँ और गिरता हूँ, और फिर से उठता हूँ, वह प्रेम मेरे नंगेपन को ढँक देता है, मुझे बार-बार उठाता है, और मुझे अपनी दौड़ जारी रखने के लिए प्रेरित करता है।
- वह प्रेम मुझे नज़रअंदाज करना नहीं जानता - यहां तक कि जब दुनिया मुझे अस्वीकार कर देती है या बेकार समझकर त्याग देती है, तो वह मुझे राख के ढेर और धूल से उठाता है और मेरा इस्तेमाल करता है।

जानता है

- वह प्रेम क्षमा करना जानता है — दुनिया में सबसे बड़ा पाप व्यभिचार का पाप है। यह पाप करने वाली एक स्त्री को किसी ने माफ नहीं किया। बल्कि, जब लोगों ने उसे मारने के लिए पत्थर उठाए तब वह प्रेम उसे अपने हाथों से क्षमा देना और अपने वचनों से पुनर्स्थापित करना जानता था।
- वह प्रेम तोड़ना और बनाना जानता है: अपने हाथ की ताकत से, वह चट्टानों जैसे अनगिनत हठीले दिलों को तोड़ता है और बनाता है, उन्हें मजबूत करता है, और उन्हें ताजा, तेज उपकरणों तथा चमकाए हुए तीरों में बदल देता है।
- वह प्रेम आपको ऊपर उठाना और ऊंचा करना जानता है - वह प्रेम आपके शत्रु के सामने, जो आपके गिरने का उत्सुकता से इंतजार कर रहा है, एक दावत तैयार करके और आपके सिर पर तेल लगाकर आपको ऊपर उठाना और ऊंचा करना जानता है।

ऐसा अविश्वसनीय प्रेम यीशु मसीह का प्रेम है!

मेरे प्रिय युवाओं! ये अथाह प्रेम आज बाहें फैलाए आपका इंतजार कर रहा है...

- आपको माफ करने और एक नया जीवन देने के लिए,
- आपको औजार बनाने और इस्तेमाल करने के लिए,
- आपको ऊपर उठाने और ऊँचा करने के लिए।

ऐसे लाखों युवा हैं जिन्होंने अभी तक इस प्रेम को न तो जाना है, न ही महसूस किया, और न ही सुना है। आपको इस सच्चे प्रेम को दुनिया के सामने घोषित करना होगा। आपको इस अद्भुत प्रेम को हर कस्बे और शहर तक फैलाने की जरूरत है। यह न भूलें कि आप केवल दर्शक होने के विपरीत इन जाग्रति के दिनों में एक सक्रिय भागीदार हैं! इस अद्भुत प्रेम का पूरी दुनिया में ईमानदारी और उत्सुकता से प्रचार करें!!

मसीह के मिशन में
अविनाश

संजोए जाने योग्य रत्न

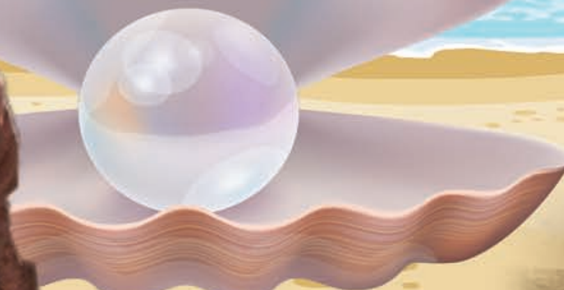

बाइबल से अनेक सद्गुणी व्यक्तियों के बारे में हमें पता चलता है। अभी भी कुछ ऐसे हैं जिनके बारे में शायद हम नहीं जानते होंगे। आइए इस लेख में हर महीने उन पर एक नजर डालें।

हमें बाइबल में इपफ्रुदीतुस के अधिक हवाले नहीं मिलते हैं। फिलिप्पियों की पुस्तक में केवल नया नियम में 6 पद, प्रेरित पौलुस द्वारा लिखे गए अध्याय 2:25-30 उसका जिक्र करते हैं।

यूनानी देवी के नाम पर उसका नाम इपफ्रुदीतुस रखा गया। बाइबल के विद्वानों का मानना है कि इपफ्रुदीतुस, एक अन्यजाति होने के नाते, प्रेरित पैलुस के उपदेश के माध्यम से यीशु मसीह को जानता होगा।

फिलिप्पियों की पुस्तक तब लिखी गई जब पैलुस रोम में कैद था। 800 मील की यात्रा के बाद, इपफ्रुदीतुस ने पौलुस को वह भेंट दी जो फिलिप्पी के लोगों ने पौलुस की कमी पूरी करने के लिये दी थी। पैलुस ने फिलिप्पियों 2:26, 27 और 30 में लिखा है कि 'उचित नींद और उचित भोजन के बिना कई मील की यात्रा करने के कारण, वह शरीर में बहुत बीमार, लगभग मरने के करीब हो गया है।'

पैलुस ने इपफ्रुदीतुस के बारे में गवाही देते हुए कहा, "वह सिर्फ आपका प्रतिनिधि नहीं है, बल्कि मेरा भाई, सहकर्मी, साथी सैनिक और वह है जिसने मेरी ज़रूरत पूरी की।" यद्यपि उसका काम छोटा था, फिर भी इपफ्रुदीतुस इसके प्रति वफादार था। इस तथ्य के बावजूद कि वह मृत्यु के कगार पर था, उसने यीशु मसीह के लिए सब कुछ सहन किया और अपने नियुक्त मिशन को त्रुटिहीन ढंग से पूरा किया।

आप दूसरों के लिए जो अच्छे काम करते हैं, उन पर दूसरों का ध्यान नहीं जा सकता। परन्तु इपफ्रुदीतुस की नाईं इसे मसीह के प्रति विश्वासयोग्यता से करें। वह एक ऐसा शिष्य था जिसने अपने गुरु को सम्मान दिलाया। बाइबल में कहीं भी उसके उपदेश का कोई उल्लेख नहीं है। हो सकता है कि उस दिन वह बहुत से लोगों को अच्छी तरह से ज्ञात न रहा हो। लेकिन आज, प्रभु ने अपने सच्चे प्रेम और सेवकाई को कई लोगों द्वारा चर्चा करने के लिए उपलब्ध कराया है।

मेरे प्रिय युवा पाठकों, बाइबल में इपफ्रुदीतुस का उल्लेख करने वाली बहुत कम पंक्तियाँ हैं। लेकिन वह एक वफादार सेवक के रूप में परमेश्वर और उसके स्वामी का प्रिय था। उसी तरह, परमेश्वर चाहते हैं कि हम इपफ्रुदीतुस की तरह आज्ञाकारी बनें, चाहे काम का आकार कुछ भी क्यूं न हो।

कभी न भूलने वाला !

हालाँकि भाई जोएल का जन्म एक मसीही परिवार में हुआ था और छोटी उम्र से ही उसका परमेश्वर के साथ अच्छा रिश्ता था, जैसे-जैसे वह बड़ा हुआ, परमेश्वर के साथ उसका रिश्ता टूट गया और उसने ऐसा जीवन जीया जिसका परमेश्वर से कोई लेना-देना नहीं था। क्या हम उससे पूछें और सीखें कि परमेश्वर उसे अपने करीब कैसे लाए?

क्या आप हमें अपने बचपन और परिवार के बारे में बता सकते हैं?

मेरा जन्म कोयंबटूर में ऐसे माता-पिता के घर हुआ जो प्रार्थनाशील और विश्वास में उत्साही हैं। मैंने अपनी स्कूली शिक्षा वहीं पूरी की और फिलहाल मैं बी.एस.सी. के तीसरे वर्ष की पढ़ाई कर रहा हूं। मेरे पिताजी सरकारी कार्यालय में कार्यरत हैं, और मेरी माँ एक शिक्षिका के रूप में कार्यरत हैं। मेरे दादा-दादी ने, बहुत छोटी उम्र से, मुझे चर्च से संबंधित सभी गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया, मुझे संडे स्कूल और वेकेशन बाइबल स्कूल में जाने के लिए कहा, और मुझे बाइबल के पद याद करवाए। मैं परमेश्वर को खोजने की आदत के साथ बड़ा हुआ हूं।

यह जानकर अच्छा लगा कि आप छोटी उम्र से ही परमेश्वर की खोज में बड़े हुए हैं। जब आप किशोर थे तब आपका जीवन कैसा था?

जब तक मैं 8वीं कक्षा में नहीं था तब तक मैं चर्च जाता था और फिल्में देखने जैसी सांसारिक गतिविधियों में शामिल रहता था। मुझे इस बात की जानकारी नहीं थी कि हमें पूरे दिल से परमेश्वर की तलाश करनी चाहिए। मैं हर दिन बाइबल पढ़ता था, चर्च जाता था और प्रार्थना करता था। दूसरी ओर, मैं यह महसूस किए बिना कि यह पाप है, हर दिन फिल्में देखता था। अपने दोस्तों के साथ, मैंने 9वीं कक्षा में विभिन्न पापपूर्ण सांसारिक कामों में लिप्त होना शुरू कर दिया।

जैसे-जैसे दिन बीतते गए, मेरे मन में विचार आया, “मुझे चर्च क्यों जाना है?” यह आवश्यक नहीं है...!” मेरे प्रार्थना जीवन में भी गिरावट आने लगी। जब मैंने प्रार्थना में कम समय बिताना शुरू किया, तो मेरा सांसारिक जीवन और बढ़ने लगा। मैंने फिल्में देखने को पहली प्राथमिकता देना शुरू कर दिया। मैंने परमेश्वर की तलाशना कम कर दिया। जैसे-जैसे दिन बीतते गए, मैंने स्कूल जाने से पहले बाइबल की एक

पंक्ति पढ़ना या बस भजन 23 या भजन 91 पर नज़र डालना शुरू कर दिया। मैंने एक ऐसा जीवन जीया जिसका यीशु से कोई संबंध नहीं था। वह मेरे दृष्टिकोण से सिर्फ एक परमेश्वर थे। मैंने उन्हें अपने जीवन में आमंत्रित नहीं किया।

आपके जीवन में एक बड़ा बदलाव आया। ठीक है, क्या उसके बाद आपने यीशु को स्वीकार किया? या क्या आप पापमय जीवन जीते रहे?

मैं पापपूर्ण जीवन जीता रहा। 10वीं कक्षा में, मैं बहुत सारे पाप के कामों (वासना, फिल्में देखना, यीशु का मज़ाक उड़ाना, बुरे दोस्तों के साथ घूमना) में लिप्त होना शुरू कर दिया। मेरा लक्ष्य जीवन का आनंद लेना था। जैसे-जैसे मैं पिछड़ने लगा, मुझे पढ़ाई में कम अंक मिलने लगे। जैसे ही मैंने अनचाहे दोस्तों के साथ अपना समय बर्बाद करना शुरू किया, मुझे 10वीं कक्षा में एक बड़ा झटका झेलना पड़ा। मैं एक होशियार छात्र था, लेकिन मुझे केवल 73% अंक ही मिल सके।

मुझे इतने कम अंक मिलने की उम्मीद नहीं थी, लेकिन परमेश्वर की कृपा से मैंने परीक्षा पास कर ली। मुझे बताया गया कि मुझे आगे की पढ़ाई के लिए अपना मनपसंद ग्रुप नहीं मिल सका। जैसे ही मैंने 11वीं कक्षा में प्रवेश किया, मैंने और भी अधिक पाप करना शुरू कर दिया। मैं अपने फ़ोन के बिना नहीं रह सकता था। मैंने सोशल मीडिया, टिकटॉक और ऑनलाइन गेम्स पर बहुत समय बिताना शुरू कर दिया। यह दिखाने के लिए कि मैं लोकप्रिय हूं, मैं फेसबुक, इंस्टाग्राम, व्हाट्सएप और टिकटॉक पर बहुत सारी बातें पोस्ट करता था। मैं नियमित रूप से चर्च जाता था, लेकिन परमेश्वर से मेरा कोई रिश्ता नहीं था।

दयनीय... जब आप सोशल मीडिया के आदी थे तो आपने यीशु को कैसे स्वीकार कर लिया?

वर्ष 2020 में जब मैं अपनी 11वीं की परीक्षा की तैयारी कर रहा था, तब लॉकडाउन था। मैं अपने मोबाइल और लैपटॉप पर समय बिताता था, क्योंकि हम अपने घर से बाहर नहीं निकल सकते थे। मैं पूरी रात अपने मोबाइल पर चीजें देखते हुए बिताता था। मेरे माता-पिता सत्यम टीवी पर प्रसारित होने वाले 'आओ, प्रार्थना करें' कार्यक्रम देखते थे और मुझे देखने के लिए भी कहते थे। बिना किसी विकल्प के, मैं अपना मोबाइल और लैपटॉप चार्जिंग के लिए छोड़ देता था और उनके साथ कार्यक्रम देखता था। प्रार्थना के समय मेरे माता-पिता और दादा-दादी मेरे लिए बड़े बोझ के साथ प्रार्थना करते थे। तभी मुझे इसका एहसास हुआ और मैं उस स्थिति के बारे में सोचने लगा जिसमें मैं था। अप्रैल में एक कार्यक्रम "आओ, प्रार्थना करें' में, मोहन अंकल ने प्रार्थना के महत्व के बारे में बात की। उन्होंने 'एक मसीही को कैसे प्रार्थना करनी चाहिए?' के बारे में बात की। उन वचनों ने मेरे दिल को छू लिया और मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया। उसी क्षण से, मुझमें प्रार्थना करने की छोटी सी चाहत और इच्छा जागृत हुई। "यीशु, मुझे सुबह जल्दी उठने में मदद करो। मैं प्रार्थना करना चाहता हूं, लेकिन मुझे जल्दी उठकर प्रार्थना करने की आदत नहीं है," यह वह छोटी सी प्रार्थना थी जो मैंने सोने से पहले की थी। सुबह ठीक पांच बजे यीशु ने मुझे जगाया। मैंने 25 मिनट तक उत्साहपूर्वक

Bro. Joel with his Parents

प्रार्थना की। मैं ऐसा एक व्यक्ति था जो प्रार्थना में 5 मिनट भी नहीं बिताता था, लेकिन उसने मुझसे 25 मिनट प्रार्थना कराई। यही वह दिन था जब मैंने उद्धार पाया। 2020 वह वर्ष था जब परमेश्वर दयालुता से मेरी तलाश में आए, मुझे छुआ, मुझे बचाया और मुझ पर अपना प्रेम बरसाया। जब मैंने परमेश्वर की खोज शुरू की, तो उन्होंने मुझे माफ कर दिया, मुझे मेरी पापी आदतों से छुटकारा दिलाया और मुझे अपना बच्चा बना लिया।

क्या अद्भुत बात है... उद्धार पाने के बाद आपकी जिंदगी कैसी थी? क्या आपने मसीह के लिए कुछ किया?

उद्धार पाने के बाद, परमेश्वर ने मुझे अपने दोस्तों के साथ एक कॉन्फ्रेंस कॉल के माध्यम से देश के लिए एक या दो घंटे तक प्रार्थना करने में मदद की। मेरी 12वीं कक्षा के बाद, उन्होंने मुझे कोवई के एक कॉलेज में बी.एस.सी. आई.टी. में दाखिला लेने में मदद की। कॉलेज के दिनों में उन्होंने मेरे दिल को आत्माओं के बोझ से भर दिया। दिसंबर 2020 में क्रिसमस समय के दौरान, बिना किसी पूर्व अनुभव के सुसमाचार का प्रचार करने के बोझ के साथ, हम 2 से 3 दोस्तों के साथ, कोयंबटूर के एक क्षेत्र में लोगों को 'क्रिसमस मुबारक हो' की शुभकामनाएं देनी वाली पत्रिकाएं और चॉकलेट वितरित करने में कामयाब रहे। मैं इससे बहुत खुश था। मुझे वर्ष 2021 में परमेश्वर के लिए और भी बहुत कुछ करने की इच्छा थी, और मैंने नालुमावाडी में 'इग्नाइटर्स कैंप' में भाग लिया। परमेश्वर ने वहां मेरा अभिषेक किया और मुझे मजबूत किया। इसके बाद, मैं कोवई इग्नाइटर्स टीम में शामिल हो गया और बड़े बोझ के साथ प्रार्थना की कि वह शहर वापस यीशु की ओर लौट आए, और परमेश्वर ने हमारे मन को कोयंबटूर में 11 तालुकों के लिए प्रार्थना करने के बोझ से भर दिया। इस आधार पर, 2023 में, हमने हर महीने एक तालुक का दौरा किया और प्रार्थना की। परमेश्वर ने हमें 11 तालुकों में पूरी रात प्रार्थना करने में सक्षम बनाया। हम, एक टीम के रूप में, कोयंबटूर जिले की जाग्रति और युवाओं के उद्धार के लिए उत्साहपूर्वक प्रार्थना कर रहे हैं और सुसमाचार साझा कर रहे हैं। परमेश्वर अपनी महिमा के लिए कई स्थानों पर मेरा उपयोग कर रहे हैं।

Bro. Joel with his grand parents

बहुत अच्छा..! आपकी गवाही से हमने सीखा कि परमेश्वर किसी का भी उपयोग कर सकते हैं। आप हमारे युवाओं से क्या कहना चाहते हैं?

परमेश्वर मुझे ढूंढते हुए आये, जिसे 5 मिनट भी प्रार्थना करना नहीं आता था। उन्होंने मुझ पर अपना प्रेम प्रकट किया और वह मुझे, जिसके पास कोई दर्शन ही नहीं था, एक महान दर्शन से जोड़कर उपयोग कर रहे हैं। यदि वह मेरा इस तरह उपयोग करने में सक्षम हैं, तो निश्चित रूप से वह महान कार्य पूरा करने के लिए आपके साथ भी ऐसा ही करेगा, यदि आप खुद को पूरी तरह से उनके प्रति समर्पित कर दें।

प्रिय युवाओं! क्या आप भी भाई जोएल जैसी स्थिति में हैं? क्या आप पाप के चंगुल में फंसे हुए हैं और कोई छुड़ाने वाला नहीं है लेकिन परमेश्वर के करीब जाने की इच्छा और लालसा है लेकिन अपने पापों के कारण ऐसा करने में असमर्थ हैं? आज अपना जीवन पूरी तरह से परमेश्वर के हाथों में सौंप दें। वह परमेश्वर जिसने भाई जोएल को छुड़ाया, बचाया और उसका उपयोग अपने महान मिशन के लिए कर रहे हैं, निश्चित रूप से आपको कई लोगों के लिए आशीष का माध्यम बनाएंगे और आपको ऊपर उठाएंगे!

विजय झण्डा गाड़ने का प्रयास करें!

प्रिय युवा विजेताओं को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं। जीवन में हमारा हर छोटा प्रयास बड़ी उपलब्धि की ओर ले जाता है। हम जो सबसे महंगी गलती करते हैं वह है हमारे सामने आने वाली कठिनाइयों से हार मान लेना। जब हम उस जीत पर ध्यान केंद्रित करते हैं जो संघर्ष से परे है, तो हमारे सामने आने वाली चुनौतियाँ बेकार हो जाती हैं। यहां, हम आपके सामने उन भाइयों की अविश्वसनीय सफलता की यात्रा प्रस्तुत करना चाहेंगे जिन्होंने सफलता की ओर यात्रा की।

सुंदरराजन और साऊंदराजन दोनों भाई ज्यादा पढ़े-लिखे नहीं थे। उन्होंने केवल अपनी स्कूली शिक्षा पूरी की थी। लेकिन उनके पास अपनी ज़मीनें थीं और उन्होंने उन पर सब्ज़ियां उगाना शुरू कर दिया। लेकिन उन्हें इससे कोई फायदा होता नहीं दिख रहा था। क्योंकि मुनाफा नहीं हुआ इसलिए कर्ज बढ़ने लगा। इसलिए, उन्होंने एक कंपनी के लिए काम करना शुरू कर दिया। लेकिन उनकी अंतिम इच्छा अपना खुद का व्यवसाय शुरू करने की थी। इसलिए, 5000 रुपये के मामूली निवेश के साथ, भाइयों ने 1984 में 'सुगुना फूड्स' नाम से एक छोटा पोल्ट्री फार्म शुरू किया।

यह भी आसान नहीं था। इसलिए उन्होंने ठेके पर मुर्गियां पालने के बारे में सोचना शुरू कर दिया। 1990 में, सुगुना ने "कॉन्ट्रैक्ट फार्मिंग मॉडल" अपनाया, जिसने भारतीय पोल्ट्री उद्योग में क्रांति ला दी। कोई भी उनके व्यवसाय के पीछे के विचार को समझ नहीं पा रहा था और उनका मज़ाक उड़ाया गया। उन्होंने इस बात पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया। हालाँकि, उन्होंने मजाक को प्रेरणा के रूप में इस्तेमाल किया और 'इंटीग्रेटेड चिकन फार्मिंग' नामक एक विचार लेकर आए।

यहां, उन्होंने 'सुगुना समूह' के माध्यम से मुर्गियों को पालने के लिए टीकाकरण, भोजन, दवाएं और उपकरण जैसी सभी आवश्यक चीजें प्रदान कीं। इस तरह, 'सुगुना इंडस्ट्रीज' ने मुर्गी पालन के लिए एक मानदंड बनाया। सभी को आश्चर्यचकित करते हुए, इसने कुछ ही वर्षों में 7 करोड़ की आय अर्जित की।

इसे देखते हुए उन्होंने इस ब्रांड का विस्तार करने और दूसरे देशों में निर्यात शुरू करने का फैसला किया। आज, चार अफ्रीकी और प्रशांत एशियाई देशों में उनके 8,000 से अधिक कर्मचारी काम कर रहे हैं। और 40,000 से अधिक किसान अपनी स्थिर आजीविका का श्रेय सुगुना फूड्स को देते हैं। उनके पास 80+ हैचिंग सेंटर और 60+ चारा कारखाने भी हैं, और वे उन्नत टीकाकरण और अन्य मिश्रण पदार्थों पर शोध करते हैं। 5,000 रुपये के निवेश से शुरू हुई यह इंडस्ट्री आज करोड़ों का आमदनी वाली इंडस्ट्री बन गई है।

प्रिय भविष्य के विजेता जो इसे पढ़ रहे हैं! ऐसा प्रतीत हो सकता है कि सुगुना फूड्स मात्र थोड़े समय में समृद्ध हुआ है। फिर भी, उन्हें खुद को स्थापित करने के लिए हर कदम पर काफी संघर्ष करना पड़ा। हमारा जीवन पूरे समय चुनौतीपूर्ण नहीं रहेगा, लेकिन जब भी आप किसी चुनौती का सामना करें, तो साहसी बनें और उससे निपटने के लिए तैयार रहें। सफलता आपकी है!

TEC - 1

अपने फ़ोन को समझदारी से संभालें

आज युवा गैजेट्स और तकनीक से चिपके हुए हैं। जहां कुछ लोग इसका उपयोग जिम्मेदारी से करते हैं, वहीं कई अन्य लोग इस फंदे का शिकार हो जाते हैं और अपनी जान गंवा देते हैं। इस तकनीकी लेख के माध्यम से, अब से हर महीने, आप तकनीकी विकास और हमारे द्वारा उपयोग किए जाने वाले इन्हीं सेल फोन का उपयोग करके इसके जाल पर काबू पाने के तरीकों के बारे में जानेंगे।

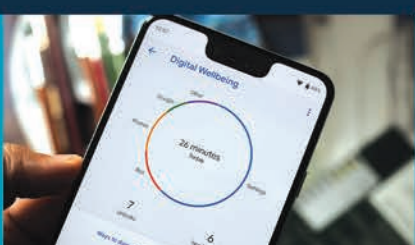

ठीक है! इस महीने, आइए 'डिजिटल वेल बीइंग' सुविधा से शुरुआत करें। क्या आप ऐसे व्यक्ति हैं जो मोबाइल फोन के आदी हैं? क्या आप इससे उबरने के लिए संघर्ष कर रहे हैं? यह टूल आपकी मदद करेगा.

सामान्य तौर पर, भले ही हम अपने दैनिक जीवन में बहुत सारी आवश्यक वस्तुओं का उपयोग करते हों, लेकिन अत्यधिक उपयोग होने पर चीजें हानिकारक हो जाती हैं। एक कहावत है, 'किसी भी चीज़ की अत्यधिकता किसी काम की नहीं होती।' इस मोबाइल फ़ोन का उपयोग ऐसा ही है। हालाँकि यह हमारे लिए उपयोगी है, लेकिन इसका अधिक उपयोग हमें खतरे में डालता है।

जब फेसबुक लॉन्च किया गया था, तो कई लोगों ने दोस्तों का एक बड़ा समूह बनाने के इरादे से साइन-अप किया था। लेकिन पिछले कुछ दिनों में लोग अपनी निजी जानकारी अनजान लोगों के साथ साझा कर बैठे और फंस गए।

आजकल कुछ लोग कहते हैं कि वे वर्तमान की घटनाओं से जुड़े रहने के लिए फेसबुक का उपयोग करते हैं, लेकिन उन्हें इस बात का एहसास नहीं होता कि वे वास्तव में इस पर कितना समय व्यतीत करते हैं।

यूट्यूब के साथ भी यही होता है। कुछ साल पहले, कई युवाओं ने टिक टोक नामक ऐप के माध्यम से अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने और नई ऊंचाइयों तक पहुंचने की कोशिश की। अफसोस की बात है कि ऐसे लोग अधिक हैं जो सफल होने से ज्यादा निराश हैं क्योंकि उन्हें उतनी संख्या में व्यूज और लाइक नहीं मिले जिनकी उन्होंने उम्मीद की थी। कई युवा जो इंटरनेट गेमिंग को एक प्रकार

के मनोरंजन के रूप में इस्तेमाल करते थे, उन्होंने अपने समय के अलावा बहुत सारा पैसा भी खो दिया है। ठीक है, क्या आपको लगता है कि फ़ोन का उपयोग करना इन सभी समस्याओं का कारण है? ऐसा नहीं है! इसका अधिक मात्रा में उपयोग करना समस्या है। चूँकि हम इसमें इतने डूबे हुए हैं, समय से अनजान हैं, हम शैतान के जाल में फँस जाते हैं। डिजिटल वेल-बीइंग नामक यह सुविधा इस समस्या के लिए एक बेहतरीन समाधान के रूप में कार्य करती है। इसके जरिए आप एक समय अवधि निर्धारित कर सकते हैं कि मोबाइल को कितनी देर तक इस्तेमाल करना चाहिए। इसके लिए आपको कोई एप्लिकेशन डाउनलोड करने की जरूरत नहीं है। हर मोबाइल फोन में सेटिंग्स नाम का एक विकल्प होता है। आप अपनी फ़ोन सेटिंग में डिजिटल वेल-बीइंग और पेरेंटल कंट्रोल विकल्पों को सक्षम करके अपने दैनिक मोबाइल फ़ोन के उपयोग का समय देख सकते हैं। इसमें साप्ताहिक रिपोर्ट दर्शाती है कि आपने पूरे सप्ताह प्रत्येक एप्लिकेशन पर कितना समय बिताया है।

इसी तरह, स्क्रीन टाइम गोल के साथ, आपको बस यह निर्दिष्ट करना है कि आप अपने फोन पर कितना समय बिताना चाहते हैं; यदि आप इसे इससे अधिक समय तक उपयोग करते हैं, तो एक अलार्म बज जाएगा।

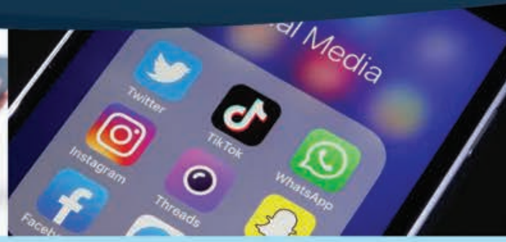

कोई भी विशेष ऐप जिसका आप कम उपयोग करना चाहते हैं, उसके नीचे ऐप टाइमर अनुभाग में एक टाइमर सेट हो सकता है। यदि आप सेट टाइमर से परे ऐप का उपयोग करते हैं, तो ऐप तुरंत बंद हो जाता है।

वह ऐप आपके लिए अगले दिन ही उपलब्ध होगा। यदि आप इन जैसे आत्म-नियंत्रण उपायों को स्थापित करते हैं तो आप मोबाइल फोन की लत पर जल्दी ही काबू पा सकते हैं।

प्रेरित पैलुस कहते हैं, "सब वस्तुएँ मेरे लिये उचित तो हैं, परन्तु सब वस्तुएँ लाभ की नहीं, सब वस्तुएँ मेरे लिये उचित हैं, परन्तु मैं किसी बात के अधीन न होऊँगा।" (1कुरिन्थियों 6:12), और देखें कि यह वर्तमान परिस्थितियों के लिए कितना उपयुक्त है! हमें मोबाइल फोन का उपयोग करने का अधिकार है, लेकिन हमें उनकी लत नहीं लगानी चाहिए।

क है दोस्तों! मुझे आशा है कि आपको यह जानकारी उपयोगी होगी। मैं अगले महीने एक अलग तकनीकी जानकारी के साथ आपसे फिर मिलूंगा।

प्रेम का प्रकटीकरण

प्रेम धैर्यवान है

सच्चा प्रेम कड़वाहट पैदा नहीं करता। यह आत्म-संयम है, प्रतिशोधात्मक या दंडात्मक नहीं।

प्रेम दयालु है

सच्चा प्रेम न केवल धैर्यवान है बल्कि दयालु भी है। दयालुता दूसरे व्यक्ति के सकारात्मक पहलुओं को प्रेरित करती है।

प्रेम ईर्ष्या नहीं करता

यह ईर्ष्या व्यक्त नहीं करता जब उसके पास कुछ ऐसा नहीं है जो दूसरों के पास है। बल्कि अपनी अक्षमता के बावजूद भी दूसरों को प्रेरणा देती है.

Heart Beat

सपने से बढ़कर दोस्त?

मैंने कॉलेज की पढ़ाई पूरी कर ली है और आई.ए.एस. कोचिंग की तैयारी शुरू कर दी है। एक आई.ए.एस. अधिकारी के रूप में जनता की सेवा करना मेरा लक्ष्य है। पिछली परीक्षा में मैं कुछ अंकों से पोस्ट पाने से लगभग चूक गई थी। मैं इस साल पढ़ाई के लिए कड़ी मेहनत कर रही हूं ताकि मैं परीक्षा में सफल हो सकूं। मैं और मेरी सहेली एक साथ तैयारी करने लगे। शुरू-शुरू में हमने बहुत रुचि से पढ़ाई की। जैसे-जैसे दिन बीतते गए, सारा ध्यान चैटिंग, सोशल मीडिया और मनोरंजन पर केंद्रित हो गया। साथ में पढ़ाई करने के बजाय हम चैटिंग और ऑनलाइन गेम खेलकर समय बर्बाद करने लगीं। मैं कोचिंग सेंटर द्वारा आयोजित परीक्षणों में असफल हो गई। फिर भी, मुझे लगता है कि उसकी दोस्ती अधिक महत्वपूर्ण है। मुझे समझ नहीं आ रहा कि क्या करूं। मेरे माता-पिता मुझ पर बहुत भरोसा करते हैं। अगर इस बार मैं परीक्षा में सफल नहीं हुई तो वे निराश हो जायेंगे। मैं क्या करूँ? - अरुणा, त्रिची

मेरी प्यारी बहन अरुणा, मैं इस पत्र के माध्यम से आपकी पीड़ा महसूस कर सकता हूं। इसके अलावा, भय ने आप पर कब्ज़ा कर लिया है और आपको आगे बढ़ने से रोक दिया है। अरुणा, सबसे पहले तो मैं आपके इरादे की प्रशंसा करता हूं। ऐसी दुनिया में जहां हर कोई पैसा, प्रसिद्धि और लोकप्रियता हासिल करना चाहता है, गरीबों की मदद करने और अपने मूल लोगों की सेवा करने का आपका इरादा सराहनीय है। कितनी प्यारी शुरुआत! हालाँकि, अब आपने अनजाने में ध्यान भटकाने के लिए जगह बना ली है। इस तरह का भटकाव आपको कभी जीत नहीं दिला सकता। दोस्ती अच्छी चीज़ है। लेकिन उस दोस्ती से आपको अपने लक्ष्य तक पहुंचने में मदद मिलनी चाहिए; इसके बजाय, यदि यह ध्यान भटकाने वाली बन जाती है, तो आपको इस बारे में दोबारा विचार करना चाहिए कि रिश्ते को जारी रखना है या नहीं।

अरुणा, यह दोस्ती तुम्हें अपनी मंजिल तक पहुंचने से रोक रही है। बेहतर होगा कि आप इस मार्ग से भटकने को समझे और खुद को इससे दूर रखें।

आई.ए.एस. अधिकारी बनने के अपने सपने को साकार करने के लिए आपके लिए कुछ सुझाव

जब तक आपकी आई.ए.एस. परीक्षा समाप्त नहीं हो जाती तब तक आप अपनी सहेली से बात नहीं करेंगी।

अपनी सहेली को अपने निर्णय के बारे में उस तरह बताएं जिससे वह समझ सके। उसे बताएं कि यह दोस्ती आपके सपने और भविष्य दोनों को बर्बाद कर देगी।

सोशल मीडिया के इस्तेमाल से बचें। अपने फ़ोन का कम उपयोग करने का प्रयास करें।

यदि संभव हो तो कोचिंग सेंटर में अपना समय बदलें और जब आपकी सहेली न आए तो उस बैच में जाने का प्रयास करें। अगर नहीं तो कोचिंग सेंटर ही बदल लें।

दृढ़ संकल्प करें कि 'मैं किसी भी चीज़ के लिए अपना सपना नहीं खोऊंगी।'

आई.ए.एस. प्रारंभिक और मुख्य परीक्षा तक अपने फोन से अनावश्यक ऐप्स (फेसबुक, इंस्टाग्राम, स्नैपचैट, गेम ऐप्स इत्यादि) को अनइंस्टॉल करना बेहतर है जो आपका ध्यान भटकाते हैं।

डिजिटल वेलबीइंग को चालू करें और यूट्यूब और उन ऐप्स के लिए टाइमर सेट करें जो आपका अधिकांश समय उपभोग करते हैं।

अपनी पढ़ाई में प्रत्येक विषय के लिए पर्याप्त समय आवंटित करने का प्रयास करें, जैसा आपने पहले समय सारिणी के साथ किया था।

जब आप इस तरह से खुद को अनुशासित करती हैं, तो सफलता की संभावना अधिक होती है।

इन सुझावों का पालन करने में असफल होने पर आने वाले नुकसान

- यदि आप उसके साथ अपनी दोस्ती इसलिए बनाए रखती हैं क्योंकि आपको लगता है कि यह महत्वपूर्ण है, तो आपका आई.ए.एस. का सपना कभी पूरा नहीं होगा।
- यह आपको शर्मनाक अंत की ओर ले जाएगा।
- कलेक्टर बनकर प्रतिष्ठित जीवन जीने की अपेक्षा आपको असफलता और तिरस्कार सहना पड़ेगा।
- वही सहेली जिसे आपने अपने लक्ष्य से अधिक प्राथमिकता दी थी, वह आप पर यह कहते हुए आरोप लगा सकती है कि आपने उसका जीवन बर्बाद कर दिया।
- आपकी वजह से आपका परिवार अत्यधिक दुःख और शर्मिंदगी का अनुभव कर सकता है।

यदि आप विश्वास के साथ प्रार्थना करते हुए कहती हैं, "यीशु मेरी मदद करें, " तो वह आपको विजयी बनाएंगे और आपको ऊंचा उठाएंगे! श्लोक के अनुसार, "मत डर, क्योंकि मैं तेरे संग हूँ, इधर-उधर मत ताक, क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर हूँ; मैं तुझे दृढ़ करूँगा और तेरी सहायता करूँगा, अपने धर्ममय दाहिने हाथ से मैं तुझे सम्भाले रहूँगा।" (यशायाह 41:10)। परमेश्वर आपको मजबूत करेंगे और आपको अपना लक्ष्य हासिल करने में मदद करेंगे!

यीशु का अद्भुत प्रेम!

वह यरीहो में प्रवेश करके जा रहा था। वहाँ जक्कई नामक एक मनुष्य था, जो चुंगी लेनेवालों का सरदार और धनी था। वह यीशु को देखना चाहता था कि वह कौन सा है? परन्तु भीड़ के कारण देख न सकता था। क्योंकि वह नाटा था। तब उसको देखने के लिये वह आगे दौड़कर एक गूलर के पेड़ पर चढ़ गया, क्योंकि यीशु उसी मार्ग से जानेवाला था।
लूका 19:1-4

जब यीशु यरीहो नामक शहर में पहुंचे, तो उनकी मुलाकात जक्कई नाम के एक व्यक्ति से हुई, जो चुंगी लेनेवालों का सरदार था, जो काफी धनी था लेकिन आंतरिक शांति या तृप्ति की भावना के बिना रहता था। यह सुनकर कि यीशु वहाँ से गुज़र रहे हैं, जक्कई, हालाँकि शारीरिक रूप से छोटा था, वह उस भीड़ के बीच जिसने यीशु को घेरा हुआ था यीशु की एक झलक पाने के लिए उत्सुक था। अपनी ऊंचाई के कारण, वह भीड़ से ऊपर नहीं देख सका, जिसने उसे आगे दौड़ने और बेहतर जगह से देखने के लिए गूलर-अंजीर के पेड़ पर चढ़ने के लिए प्रेरित किया। जक्कई की आशा को भांपते हुए, यीशु ने ऊपर देखा और उससे कहा, "झट उतर आ; क्योंकि आज मुझे तेरे घर में रहना अवश्य है।" अविश्वास से अभिभूत होकर, जक्कई बहुत खुशी के साथ पेड़ से नीचे उतरा और यीशु का अपने घर में स्वागत किया।

उस शहर के निवासियों ने उसका तिरस्कार करते हुए कहा, "वह गलत काम करने वाला व्यक्ति है; वह गलत तरीके से धन अर्जित करता है, रिश्वत लेता है, और एक सरकारी अधिकारी के रूप में, चुंगी लेने में जनता को धोखा देता है। वह गैरकानूनी तरीके से दूसरों की संपत्ति जब्त कर लेता है।" वे उसके पाप के कारण उससे घृणा करते थे। वह किसी के प्रेम सं वंचित रहता था और सभी उसकी उपेक्षा करते थे। उसमें एक आंतरिक खालीपन बना रहा, क्योंकि उसके पास दूसरों के प्रेम की कमी थी।

उसी क्षण, यीशु ने उससे भेट की और उसके घर जाने का प्रस्ताव दिया। यह इशारा उसे यूं समझ आया जैसे कि यीशु ने कहा हो, "जक्कई, भले ही दूसरे तुमसे प्रेम न करें, मैं करता हूँ; भले ही कोई तुम्हारे घर न आता हो, मैं आ रहा हूँ।" उसकी घायल आत्मा को गहरा आराम महसूस हुआ। वह अत्यधिक उत्सुकता और जिज्ञासा के साथ यीशु के स्वभाव की खोजना चाहता था। आख़िरकार, उसे एहसास हुआ कि यीशु अविश्वसनीय रूप से प्रेम करनेवाले थे, जिससे उसे यह समझ में आया कि यीशु एक प्रेम करने वाले परमेश्वर हैं जो पापियों की भी परवाह करते हैं।

मत्ती 15:32 में, एक घटना का विवरण है जहां भीड़ भोजन और आराम की आवश्यकता की उपेक्षा करते हुए, लगातार तीन दिनों तक यीशु की शिक्षाओं को सुनने में लीन रही। तब प्रभु ने अपने शिष्यों से कहा, "मुझे इन लोगों पर दया आती है; वे तीन दिन से मेरे साथ हैं और उनके पास खाने के लिए कुछ नहीं है। मैं उन्हें भूखा नहीं भेजना चाहता, नहीं तो वे मार्ग में ही

गिर पड़ेंगे।" यीशु बहुत उत्सुक थे कि उनके लिए कोई चमत्कार किया जाए। तब प्रभु ने पांच रोटियां और दो मछलियों पर आशीष दी, उन्हें बहुत सा बना दिया, और लोगों को पूरी तृप्ती की भोजन दिया, और उन्हें खुशी के साथ विदा किया।

यीशु को यह चमत्कार करने के लिए किसने प्रेरित किया? उनका इरादा प्रदर्शन और घोषणा करना नहीं था, "हे लोगों, मेरी सामर्थ के गवाह बनो।" इसके बजाय, यीशु ने लोगों की ज़रूरतों को पहचानकर प्रेम और करुणा से प्रेरित होकर आश्चार्यकर्म किए। हमारा परमेश्वर एक दयालु परमेश्वर है जिसने पृथ्वी पर हमारे लिए उस प्रेम को प्रकट करने के लिए ही मानव रूप में इस दुनिया में प्रवेश किया है।

मत्ती 9:10 में, यीशु मत्ती के घर पर भोजन कर रहे थे जब चुंगी लेनेवालों और पापियों की एक भीड़ उनके और उनके शिष्यों में शामिल हो गई। यह देखकर, शास्त्री और फरीसियों ने, जो मानते थे कि वे सबसे अधिक धर्मी और परमेश्वर के सबसे करीब थे, चिढ़कर यीशु के शिष्यों से सवाल किया, "तुम्हारा शिक्षक चुंगी लेनेवालों और पापियों के साथ भोजन क्यों करता है?" उन्होंने यीशु पर ऐसे व्यक्तियों के साथ संबंध रखने का आरोप लगाया जिन्हें समाज पापी और बहिष्कृत मानता था। जब यीशु ने यह सुना, तो उसने कहा, "वैद्य भले चंगों को नहीं परन्तु बीमारों के लिए आवश्यक है। इसलिए तुम जाकर इसका अर्थ सीख लो, कि मैं बलिदान नहीं परन्तु दया चाहता हूँ; क्योंकि मैं धर्मियों को नहीं परन्तु पापियों को बुलाने आया हूँ।" मत्ती 11:19 के अनुसार, धर्म-शास्त्र यह पुष्टि करते हैं कि यीशु पापियों का पहला साथी है। यीशु ने स्वयं को समाज के उन लोगों के साथ जोड़ा जिन्हें पापी कहा जाता था और जो नीची जाति के माने जाते थे।

क्या आप यीशु द्वारा किये गये अंतिम चमत्कारी कार्य से परिचित हैं? गतसमनी के बगीचे में, जो धार्मिक अगुए उनसे ईर्ष्या करते थे, वे यीशु को क्रूस पर चढ़ाने के लिए उन्हें गिरफ्तार करने आए। यीशु के शिष्यों में से एक, शिमौन पतरस, जिसके पास तलवार थी, ने यीशु के पकड़े जाने पर गुस्से में आकर महायाजक के सेवक का दाहिना कान काट दिया। उसका कान टुकड़े-टुकड़े होकर गिर गया और खून बह रहा था। ऐसी अस्थिर स्थिति के बावजूद, यीशु ने आगे बढ़कर घायल व्यक्ति के कान को छुआ, और चमत्कारिक ढंग से उसे पूर्ण स्वास्थ्य में बहाल कर दिया। यीशु ने उस घायल नौकर को, जो उन्हें गिरफ्तार करने आया था, ठीक करने के लिए सीधे हस्तक्षेप करके अपने दिव्य प्रेम का प्रदर्शन किया।

मत्ती 26:50 में, यीशु ने अपनी दृष्टि यहूदा की ओर लगाई, जिसने उनके साथ होने के बावजूद, आर्थिक लाभ के लिए उन्हें धोखा देने की योजना बनाई थी। आश्चर्यजनक रूप से, यीशु ने यहूदा को शत्रु के रूप में देखने से परहेज करते हुए उसे 'मित्र' के रूप में संबोधित किया। इस दयालु काम ने यीशु के गहन प्रेम को दर्शाया, क्योंकि उन्होंने विश्वासघात की योजना बनाने वाले को भी शत्रु नहीं माना।

चेन्नई में अपने स्कूल के वर्षों के दौरान, मैं यीशु के बारे में बात करने वाले मसीहियों का उपहास करता था, उन्हें मूर्ख समझता और झूठे ईश्वर के प्रचारक मानता था। मैंने खुले तौर पर यीशु का मज़ाक उड़ाया और उन लोगों पर भी कई सवाल उठाते हुए और उनका मजाक बनाते हुए उन्हें अस्वीकार किया जिन्होंने यीशु के विषय में बताना की कोशिश की। यीशु के प्रति मेरा तिरस्कार तीव्र था। फिर भी, 14 साल की उम्र में, जब मैंने खुद को चलने, सांस लेने, बोलने, खाने, या फिर पानी तक पीने में असमर्थ पाया, सब लोगों द्वारा त्याग दिए जाने पर, मेरी मृत्यु शय्या पर लेटे हुए, यीशु ने, जिसे मैंने तुच्छ जाना था, मुझे ढूँढ़ निकाला और एक चमत्कारी चंगाई दी। मेरी गहरी नफरत के बावजूद, यीशु के एक स्पर्श ने, जिनकी मैंने आलोचना की थी, मेरी मृत्यु शय्या को एक ऐसी स्थिति में बदल दिया जहाँ मैं चल सकता था, और मेरा लंगड़ापन ठीक हो गया। मेरा सूजा हुआ हृदय सामान्य हो गया। मेरी वर्तमान खुशी का स्रोत यीशु के प्रेम को माना जाता है। अब भी, मैं यीशु के इस अद्भुत प्रेम को समझने के लिए संघर्ष करता हूँ।

प्रिय युवाओं, अगर इस दुनिया में कोई असाधारण प्रेम है, तो वह यीशु का प्रेम है। वह एक दयालु परमेश्वर हैं जो हमारी बहुत परवाह करते हैं और हमारे जीवन में चमत्कार करना चाहते हैं। आपको बस उन पर विश्वास रखने की जरूरत है। वह सौम्य, दयालु और सचमुच अद्भुत हैं। यीशु का नाम लेने मात्र से हमारे दिलों में अपार खुशी आती है। उन्होंने खुद को बलिदान दिया और हमारे लिए फिर से जी उठे। उन्हें गले लगाएं, उनकी अच्छाइयों का अनुभव करें, और आपका हृदय असीम आनंद से भर जाएगा!

बहादुर तीमुथियुस

मेरे प्रिय युवाओं को यीशु मसीह के नाम में शुभकामनाएं, जो जाग्रति के इस मौसम में प्रभु के लिए एक नए युग का निर्माण करने के लिए चुनी गई पीढ़ी हैं।

नमस्कार दोस्तों, आप सब कैसे हैं?

मुझे आशा है कि हर किसी के लिए नए साल की पूर्वसंध्या अद्भुत रही होगी। यह संभव है कि आपमें से कई लोगों ने कुछ निश्चित संकल्प लिए हों और बमुश्किल एक महीने में ही उन पर कायम रहना मुश्किल हो गया हो। हालाँकि, प्रेरणा के स्रोत के रूप में, हम आने वाले महीनों में एक साहसी युवक की कहानी देखेंगे जिसने अपने प्रारंभिक वर्षों के दौरान यीशु का अनुसरण करने का निर्णय लिया और उसने इसे कैसे जीया।

मैं आपको यह कहते हुए सुन सकता हूं, 'आह, वह कौन है जिसने अपने संकल्प को अंत तक कायम रखा जबकि हम सिर्फ एक महीने तक अपने संकल्प को कायम रखने के लिए संघर्ष करते रहे?' दोस्तों, उसे जानने के लिए पढ़ना जारी रखें।

पवित्र वचनों को जाने, और आप जान जाएंगे। चूँकि वह युवा लड़का बचपन से ही पवित्र वचनों को जानता था, इसलिए वह लगभग दो हजार वर्षों से जाना जाता है। विश्वास की लौ उसकी दादी ने भड़काई, उसकी माँ ने उसे और भड़काया, और इस युवक के भीतर प्रज्वलित किया। वह आग आज भी पूरी दुनिया में जल रही है। वह बहादुर युवा लड़का कौन है जिसने विलासिता और उत्तम कपड़ों का जीवन त्याग दिया, उसका दिल बहादुर था, उसे कोई डर नहीं था, और वह उस उद्धारकर्ता के लिए कुछ करने की तीव्र इच्छा से भरा था जिसने उसके लिए अपना जीवन दे दिया?

यह तीमुथियुस है। उसका जन्म 17वीं शताब्दी ई. में हुआ था। वह वर्तमान तुर्की में लुस्त्रा के मूल निवासी थे। इसका नाम ही खास है। शायद आप सोच रहे होंगे कि ऐसा क्या है जो इसे अनोखा बनाता है। चलिए मैं आपको और बताती हूं।

तीमुथियुस नाम का अर्थ वह है जो परमेश्वर का सम्मान करता है और जो परमेश्वर द्वारा सम्मानित किया गया है। वह अपने नाम के अनुरूप रहा। उसके पिता यूनानी थे और उसकी मां यूनिस एक यहूदी महिला थी। उसकी दादी लोइस थीं। जब प्रेरित पौलुस और बरनबास अपनी

पहली मिशनरी यात्रा पर लुस्त्रा आए, तो यह परिवार बच गया। तीमुथियुस की उम्र लगभग 20 वर्ष रही होगी। यह वह उम्र थी जिसमें सांसारिक प्रेम युवाओं के मनों से चिपक जाता है। लेकिन तीमुथियुस ने सभी सांसारिक चीज़ों को त्याग दिया, यीशु को अपने उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार किया और अपना जीवन प्रभु की सेवा में समर्पित कर दिया।

उनके बदले हुए जीवन का कारण न केवल पैलुस की शिक्षाएँ हैं, बल्कि उनके साथ-साथ उनकी माँ और दादी भी उनके जीवन में दो स्तंभों की तरह थीं। तीमुथियुस ने उन सभी का पालन किया।

तीमुथियुस प्रार्थना की प्रबल आदतों और अपनी माँ और दादी की प्रभु में अटूट आस्था से प्रभावित था, और वह भी ऐसे ही गुण रखने की आकांक्षा रखता था।

हम भी हर रविवार को चर्च जाते हैं, कई प्रार्थना सभाओं में भाग लेते हैं, परमेश्वर के सामने समर्पण करते हैं और वहां कई फैसले लेते हैं। लेकिन हम कितने दिनों तक एक ही दिमाग रख पाते हैं और एक ही फोकस के साथ अपनी दौड़ में भाग पाते हैं? वहां जो बातें कही गईं, जो संकल्प लिए, उन पर हम कितने दिन टिकते हैं?

हमने कितनी बार अपने घरों में प्रार्थना करने और बाइबल पढ़ने के अपने माता-पिता के निर्देशों की अवहेलना की है? कई बार, हम उन्हें हमारे बजाय प्रार्थना करने के लिए कहते हैं, कुछ ऐसा कहकर, “यह पीढ़ी आपसे अलग है; हमें अपनी जवानी का आनंद लेने की ज़रूरत है,” इत्यादि, है ना?

छोटी उम्र में, जो कल्पनाओं से भरी होती है, हमारे नायक तीमुथियुस ने अपना जीवन प्रभु को समर्पित कर दिया। उसने प्रेरित पौलुस द्वारा कहे गए परमेश्वर के वचन पर मनन किया और यीशु के लिए जीने का निर्णय लिया। उसने यीशु के लिए सभी सांसारिक सुखों को त्याग दिया और प्रभु के लिए कुछ हासिल करने का उत्साह और साहस रखा। वह अपनी दादी और माँ की आज्ञा मानकर अपने आत्मिक जीवन में आगे बढ़ा।

प्रिय युवाओं, क्या हम अपने निर्णयों में दृढ़ रहेंगे, अपने आत्मिक जीवन की उन्नति के लिए अपने माता-पिता की सलाह का पालन करेंगे, और तीमुथियुस की तरह साहसपूर्वक प्रभु के लिए महान कार्य करने के लिए निकल पड़ेंगे?

- मिशन यात्रा जारी रहेगी...

मध्यस्थता करें

फरवरी 2024

बेरोजगारी

2023 में वैश्विक स्तर पर 2,61,847 लोगों ने अपनी नौकरियां गंवाईं। पिछले महीने पेटीएम से 1,000 लोगों को नौकरी से निकाला गया। पिछले साल 2,141 लोगों को नौकरी से निकाला गया था। पिछले साल अकेले डंज़ो में कुल 450 लोगों ने अपनी नौकरियाँ खो दीं। शेयर-चैट ने अपने 600 कर्मचारियों को छंटनी के नोटिस दिए हैं। इन कंपनियों ने 2 साल में भारत में 90,000 लोगों को नौकरी से निकाल दिया है।

प्रार्थना विषय

1. दुनिया भर में अपनी नौकरियाँ खो चुके 261,000 लोगों के लिए नई नौकरियाँ पाने के लिए प्रार्थना करें।

2. नौकरी छूटने से पीड़ित युवाओं के लिए प्रार्थना करें कि वे गलत निर्णय न लें और अपना भरोसा न खोएं।

3. वर्ष 2024 में छँटनी रोकने के लिए प्रार्थना करें।

4. आईटी कंपनियों में निवेश बढ़ने, अच्छा रिटर्न देने और रोजगार के अवसर बढ़ाने के लिए प्रार्थना करें।

वायु प्रदूषण और कैंसर

एशियाई देशों में वायु प्रदूषण के बढ़ते स्तर के कारण कैंसर की घटनाएं बढ़ रही हैं। अकेले भारत में 12 लाख लोगों में से 9.3 लाख लोग इस बीमारी की चपेट में आ चुके हैं। चीन, भारत और जापान 2019 में सबसे अधिक कैंसर रोगियों और मृत्यु दर वाले शीर्ष तीन देश हैं - कुल मिलाकर 94 लाख लोग प्रभावित हुए और 56 लाख मौतें दर्ज की गईं। कैंसर विभिन्न कारकों से उत्पन्न होता है, जैसे धूम्रपान, शराब का सेवन और पर्यावरण प्रदूषण।

प्रार्थना विषय

1. प्रार्थना करें कि परमेश्वर कैंसर से पीड़ित लोगों को आराम प्रदान करें ताकि वे लंबा जीवन जी सकें।

2. आइए प्रार्थना करें कि इस दुःख में किसी की जान न जाए।

3. हमारे राष्ट्रों से कैंसर पैदा करने वाले एजेंटों के पूर्ण उन्मूलन के लिए प्रार्थना करें।

4. क्या हम अपने देश के वायुमंडल से वायु प्रदूषकों को पूर्णतया हटाने के लिए दैवीय हस्तक्षेप की मांग कर सकते हैं?

भारत के 28 राज्यों में से 8 केंद्र शासित प्रदेश हैं। भारत में 543 निर्वाचन क्षेत्र हैं। 9.1 करोड़ मतदाता मतदान करेंगे। सत्तारूढ़ दल, भाजपा, देश भर में 38 पार्टियों के साथ गठबंधन में चुनाव लड़ रहा है। विपक्षी कांग्रेस 26 अन्य दलों के साथ चुनाव लड़ रही है। भारत में अधिक संसदीय निर्वाचन क्षेत्रों वाला राज्य उत्तर प्रदेश है।

प्रार्थना विषय

1. प्रार्थना करें कि वर्ष 2024 में होने वाले संसदीय चुनावों में परमेश्वर का शासन और इच्छा हो, और परमेश्वर द्वारा चुने गए उम्मीदवारों के चयन के लिए प्रार्थना करें।

2. चुनाव की तैयारी कर रहे दलों के लिए प्रार्थना करें कि वे किसी भी गैरकानूनी कार्य में शामिल न हों।

3. देश भर में चल रहे 10 लाख मतदान केंद्रों पर परमेश्वर से सुरक्षा के लिए प्रार्थना करें।

4. प्रार्थना करें कि चुनाव अधिकारियों और पुलिस विभाग को परमेश्वर की सुरक्षा मिले।

प्राकृतिक आपदाएं

हाल के वर्षों में लीबिया में आई बाढ़ के कारण 4,000 से अधिक लोग मारे गए और 10,000 लोग लापता हो गए। चीन में आए शायुनी चक्रवात के कारण 880,000 से अधिक लोगों को निकाला गया। मोरक्को में आए भूकंप में हजारों लोगों की मौत हो गई। बड़ी-बड़ी विपत्तियाँ आईं। पूर्वी लीबिया में तूफान और बाढ़ के कारण 4,300 से अधिक लोग मारे गए हैं।

प्रार्थना विषय

1. प्रार्थना करें कि परमेश्वर देश को प्राकृतिक आपदाओं से बचाएं।

2. प्रार्थना करें कि भूकंप, भूस्खलन और बाढ़ से होने वाली आपदाओं को रोका जाएगा।

3. प्रार्थना करें कि प्राकृतिक आपदाओं के कारण बड़े पैमाने पर मौतें न हों और उन्हें रोका जाए।

4. राष्ट्र पर परमेश्वर के अधिकार और सुरक्षा के लिए प्रार्थना करें।

अद्भुत प्रेम

मनुष्य सहित पृथ्वी पर सभी जीवित प्राणी प्रेम के लिए तरसते हैं। प्रेम समस्त मानव अस्तित्व का मूल आधार है।

जब लोग अकेला और असहाय महसूस करते हैं, तो उन्हें प्रेम की ज़रूरत होती है। लोगों को प्रेम की ज़रूरत तब होती है जब वे असहाय और अकेला महसूस करते हैं। हर किसी का हर समय हर किसी के प्रति एक जैसा प्रेम नहीं रहता। जब हम हाई स्कूल या कॉलेज से स्नातक होते हैं, तो पूरे समय दौरान बना अपने दोस्तों के प्रति हमारा जो स्नेह था वह समाप्त हो जाता है। यह हमें एहसास कराता है कि संसार का प्रेम कितना भ्रामक है।

जब बच्चों को अपने माता-पिता से पर्याप्त प्रेम और स्नेह मिलता है, तो यह उनके समग्र विकास में मदद करता है। लेकिन आज की आधुनिक दुनिया में विभिन्न कारणों से माता-पिता अपने बच्चों पर प्रेम और स्नेह नहीं बरसा पाते हैं। जब माता-पिता का प्रेम और गर्मजोशी ख़त्म हो जाती है, तो बच्चों को तब आराम मिलता है जब वे किसी ऐसे व्यक्ति से जुड़ते हैं जो उनके काम या पढ़ाई की जगह पर उन्हें प्रेमी लगता है और अंततः वे पाखंडी सांसारिक प्रेम का शिकार हो जाते हैं।

कामुकता और प्रेम की स्वाभाविक प्रकृति मिलकर दूसरे लिंग के लोगों के प्रति आकर्षण पैदा करती है जो अंततः प्रेम में बदल जाता है। आजकल, बहुत से कॉलेज और स्कूल के बच्चे इस तरह के प्रेम का शिकार हो जाते हैं और अपनी शिक्षा और भविष्य से चूक जाते हैं। यहाँ तक कि धार्मिक बच्चे भी इस प्रकार के सांसारिक प्रेम का अनुभव करते हैं और यीशु को दुःखी करते हैं। बाइबल कहती है, "तुम न तो संसार से और न संसार की वस्तुओं से प्रेम रखो यदि कोई संसार से प्रेम रखता है, तो उसमें पिता का प्रेम नहीं है। क्योंकि जो कुछ संसार में है, अर्थात् शरीर की अभिलाषा, और आँखों की अभिलाषा और जीविका का घमण्ड, वह पिता की ओर से नहीं, परन्तु संसार ही की ओर से है।" [1यूहन्ना 2:15, 16]।

शिमशोन, जिसे इस्राएल के लोगों की रक्षा के लिए चुना गया था, ने अपने माता-पिता के प्रेम और चेतावनी की उपेक्षा की और "तिम्नाह गया, और वहां पलिश्तियों की पुत्रियों के बीच एक स्त्री देखी" (न्यायियों 14:1) और उसे उससे प्रेम हो गया। "वह शिमशोन को अच्छी लगी।" (न्यायियों 14:7)। जो व्यक्ति संसार के प्रेम और आंखों की अभिलाषा में पड़ गया, वह धीरे-धीरे शरीर की अभिलाषा में फंस गया और परमेश्वर की बुलाहट और दृष्टि से दूर हो गया।

अंत में, यहोवा उससे दूर हो गया, और वह व्यक्ति जिसने पलिश्तियों के लिए गंभीर खतरा उत्पन्न किया था, हंसी का पात्र बन गया। उसी प्रकार, जब हम परमेश्वर के प्रेम और अपने माता-पिता के मार्गदर्शन का तिरस्कार करते हैं, तो हमारा जीवन भी हास्यास्पद हो जाता है। यहां तक कि जब शिमशोन परमेश्वर से और उसके प्रति उनके दर्श्न से भटक गया, तब भी उसके प्रति परमेश्वर का प्रेम नहीं बदला।

जब शिमशोन ने यहोवा को पुकारकर कहा, हे परमेश्वर यहोवा, मुझे स्मरण कर; मैं प्रार्थना करता हूं! मुझे बल दे, हे परमेश्वर, केवल एक बार, कि मैं एक ही झटके में पलिश्तियों से अपनी दोनों आंखों का पलटा ले सकूं।" (न्यायियों 16:28), परमेश्वर ने पाप करके खोयी हुई शक्ति उसे वापस देकर अपने प्रेम को प्रकट किया, इस प्रकार यह दिखाया कि उसका प्रेम कितना अद्भुत है।

जब हम गलतियाँ करते हैं, तो हम आमतौर पर अपने प्रियजनों की गर्मजोशी और प्रेम खो देते हैं। दूसरी ओर, हमारा परमेश्वर अपने प्रेम में अनंत है। जब तक हम इस पृथ्वी पर हैं तब तक परमेश्वर हमसे प्रेम करेगा, भले ही वह हमसे तब अधिक प्रेम करता हो जब हम पापी थे।

सभी ने सोचा कि पतरस यीशु के बाद सेवकाई का नेतृत्व करेंगा क्योंकि वह एक महत्वपूर्ण व्यक्ति था। हालाँकि, पतरस, जो परमेश्वर के इतना करीब था, ने न केवल यीशु को धोखा दिया और अपने पिछले मछली पकड़ने के उद्यम में लौट आया, बल्कि उसने दूसरों को भी अपने साथ ले लिया और परमेश्वर की पूरी योजना को खारिज कर दिया।

परन्तु यीशु उस पतरस को ढूंढ़ने लगे, जिस ने उनके पुनरुत्थान के बाद उन्हें धोखा दिया था, और उन्होंने उससे कहा, हे शमौन, योना के पुत्र, क्या तू मुझ से प्रेम रखता है? (यूहन्ना 21:17)। इसके अलावा, जब यीशु ने महान मिशन को पूरा करने के लिए उसे फिर से स्थापित करने और एक और मौका देने के लिए यह कहा, "मेरी भेड़ों को चरा," तो पतरस के लिए यीशु का अद्भुत प्रेम स्पष्ट हो गया।

मेरे प्रिय युवाओं, मानव प्रेम विशिष्ट परिस्थितियों पर निर्भर है। लेकिन परमेश्वर का प्रेम अद्भुत है। वह हमसे बिना शर्त प्रेम करते हैं। पतरस को बुलाए जाने के समय प्रभु ने पतरस को जितना प्रेम किया, उन्होंने तब भी उतना ही प्रेम किया जब पतरस ने उन्हें धोखा दिया। यीशु का प्रेम किसी भी परिस्थिति में कभी नहीं बदलता या कम नहीं होता। इसी तरह, जान लें कि आपके लिए उनका प्रेम कभी नहीं बदलेगा!

भावनाओं को पकड़ना

अकेलापन

प्रिय युवाओं, मुझे भावनाएं नामक एक नए लेख के साथ आप सभी से मिलकर खुशी हो रही है। आजकल हमारे आधुनिक वातावरण में युवाओं को अपनी भावनाओं को उचित रूप से संभालने में असमर्थता के कारण विभिन्न प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इसलिए, आने वाले दिनों में, यह फायदेमंद होगा यदि आप हर महीने एक अलग भावना और उससे निपटने के तंत्र के बारे में ज्ञान प्राप्त करें। इस महीने, आइए 'अकेलेपन' से शुरुआत करें।

अध्ययनों के अनुसार अकेलापन दुनिया की सबसे बुरी बात है। यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि अकेलापन एक जन्मजात भावना के बजाय एक मानसिक स्थिति है। जो लोग खुद को अलग-थलग कर लेते हैं या दूसरों से अलग-थलग हो जाते हैं वे इस बीमारी से पीड़ित होते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, लगभग 4.5 मिलियन लोग "अत्यधिक अकेलेपन" का अनुभव करते हैं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि उनके परिवार में और सोशल मीडिया पर कितने दोस्त हैं या उनके पास जीवन में कितना कुछ है, कुछ लोग अभी भी अकेलेपन का अनुभव करते हैं। आइए इस लेख में अकेलेपन के कारणों, प्रभावों और समाधानों की जाँच करें।

अकेलापन महसूस करने के क्षण

- जब हर कोई, या हमारे प्रियजन हमसे घृणा करते हैं और अस्वीकार करते हैं।
- जब हम किसी के लिए बेकार या अनुत्पादक होते हैं।
- कुछ लोग तब अकेलापन महसूस करते हैं जब आसपास कोई नहीं होता।
- जब हमारी भावनाओं और विचारों को साझा करने वाला कोई नहीं होता है।
- जब लोग बेरोजगार होते हैं या काफी समय से शादी नहीं हो पा रही हो।
- जिन लोगों ने प्रेम में असफलता का अनुभव किया है और जिन्होंने अपने जीवनसाथी को खो दिया है।

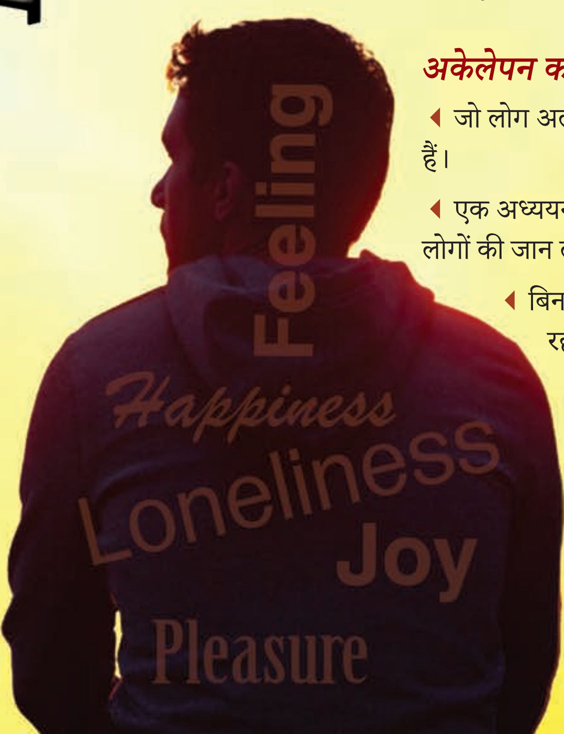

अकेलेपन का प्रभाव

- जो लोग अलग-थलग रहते हैं उनमें स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं अधिक होती हैं।
- एक अध्ययन से पता चला है कि मोटापे की तुलना में अकेलापन अधिक लोगों की जान लेता है।
- बिना रोशनी या शोर वाले कमरे में 72 घंटे तक एकांत कारावास में रहने से मतिभ्रम जैसे मनोविकृति हो सकती है।
- उच्च स्तर का अकेलापन व्यक्ति के सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन पर नकारात्मक प्रभाव डालता है।
- अकेलापन सिरदर्द, तनाव, आक्रोश और अवसाद का कारण बनता है।
- लंबे समय तक अकेलापन आत्महत्या का कारण बन सकता है।

अकेलेपन से छुटकारा पाने के उपाय

प्रकृति के साथ समय बिताने, पालतू जानवरों के साथ खेलने, विश्वसनीय लोगों से अपने मन की बात कहने, चित्रकारी करने, संगीत का आनंद लेने, किताबें पढ़ने, लिखने, पसंदीदा भोजन पकाने, घर की सफाई करने और दोस्तों और परिवार के साथ समय बिताने जैसी गतिविधियों में संलग्न होकर अकेलेपन को रोका जा सकता है। ।

अकेले रहने से बचें और अकेलेपन से छुटकारा पाने के लिए ऊपर बताई गई गतिविधियों में खुद को व्यस्त रखें।

बाइबल आधारित समाधान

मानवजाति की परवाह किए बिना हर कोई अकेलेपन का अनुभव करता है। वचनों में, भजनकार दाऊद भी कई बार रोया है, जब उसे अकेलापन महसूस हुआ और उसे नहीं पता था कि क्या किया जाए (भजन 25:16)। उस समय, दाऊद ने स्वयं को प्रभु में मजबूत किया (1शमूएल 30:6)। तो उसे सब कुछ मिल गया, जैसा कि हम 1शमूएल 30 में पढ़ते हैं। जब हम परमेश्वर के साथ सही संबंध में होते हैं, बाइबल पढ़ते हैं और प्रार्थना करते हैं तो पवित्र आत्मा हमें समर्थन देने, सांत्वना देने और अकेलेपन से बचाने के लिए हमेशा मौजूद रहता है। इसलिए इस वर्ष परमेश्वर के साथ अपने बंधन को मजबूत करने का प्रयास करें। परमेश्वर आपका सबसे बड़ा साथी, विश्वसनीय मित्र और मार्गदर्शक होगा। उसके साथ, आप निश्चित रूप से अकेलेपन से छुटकारा पा सकते हैं!

- अगले महीने भावनाओं पर एक अन्य खंड पर बात करेंगे...

राष्ट्र के लिए प्रार्थना करें... 'यीशु छुड़ाता है'

विश्व जागृति प्रार्थना भवन

Our Branches

दिल्ली 152, Pratap Nagar, Near Hari Nagar Bus Depot, New Delhi – 110 064.
Ph: 011-25616253 / 35580428.
कार्यालय समयः प्रातः 9:00 बजे से सायं 5:30 बजे तक

राँची Kadru Sarna Toli, Near Argora Railway Station Road no -1, Doranda P.o. Ranchi - 834002, Jharkhand
Ph: 0952 333 6010
कार्यालय समयः प्रातः 9:30 बजे से सायं 5:00 बजे तक

मुम्बई-धारावी नं: टी/1, ब्लॉक 11, 90 फीट रोड़, राजीव गाँधी नगर, धारावी मुम्बई - 400 017.
Ph: 80824 10410
कार्यालय समयः प्रातः 9:00 बजे से रात्रि 8:00 बजे तक

ज़रिकपुर-पंजाब SCF 19, 1st Floor, Dhakoli Kalka Road, NH - 22, Near city court Shopping Complex, ज़रिकपुर-पंजाब.
Ph: 94177 26492
कार्यालय समयः प्रातः 9:30 बजे से सायं 5:00 बजे तक

Spread the REVIVAL fire

मुम्बई-Malad 'Bethel', Plot 305/E mith chowkly Marve Road, Malad (W), Mumbai - 400064.
Ph: 96640 50567
कार्यालय समयः प्रातः 9:00 बजे से रात्रि 8:00 बजे तक

नरक का टिकट

हे दोस्तों! हम इस वर्ष एक नए लेख के साथ आपसे मिलने के लिए अत्यधिक उत्साहित हैं। जब आपने शीर्षक देखा तो क्या आपको थोड़ा झटका लगा? इस शब्द को सुनकर और पढ़कर कई लोगों के मन में डर और घृणा की भावना आ जाती है। हालाँकि, कुछ लोग दावा करते हैं कि "नरक एक मिथक है" और इस पर कोई विचार करने से इनकार करते हैं।

नरक के बारे में व्यक्तियों की अलग-अलग अवधारणाएँ हैं। कुछ लोग दावा करते हैं कि बिच्छू, साँप, कीड़े और अन्य कीड़े मनुष्यों को नरक में यातनाएँ देते हैं। वास्तव में देते हैं! फिर भी, आइए देखें कि पवित्र बाइबल इस बारे में क्या कहती है।

- यह गंधक की एक ज्वलंत झील है (प्रकाशितवाक्य 21:8)
- यह अनन्त अग्नि है (मत्ती 18:8)
- वहां कीड़े नहीं मरते और आग नहीं बुझती (मरकुस 9:44)
- कोई मृत्यु नहीं है। भले ही आप मरना चाहें, आप नहीं मर सकते
- यह बिना किसी आदेश के अंधकार और मृत्यु की छाया का देश है, जहां से कोई भी वापस नहीं लौटेगा' (अय्यूब 10:21,22)
- वहाँ रोना और दाँत पीसना होगा (मत्ती 13:42)
- दिन और रात की पीड़ा हमेशा-हमेशा के लिए रहेगी (प्रकाशितवाक्य 20:10)।

'ओह! क्या नर्क इतना भयानक है? यदि हां, तो आप हमें ऐसी भयानक जगह से क्यों डरा रहे हैं?" आप पूछ सकते हैं। आपको डराना हमारा उद्देश्य नहीं है। पवित्रशास्त्र कहता है, "जो आत्मा पाप करता है वह मर जाएगा" (यहेजकेल 18:20)। हमारा विरोधी, शैतान, काफी चालाक है। वह हमें सांसारिक सुखों से लुभाता है ताकि हमारा ध्यान उस महान उद्देश्य से भटका सके जो प्रभु ने हमारे लिए रखा है। वह यह भी कहता है, "ये सब करने में कुछ भी गलत नहीं है; हर कोई ऐसा करता है," और अंततः हमें नरक की अनंत कब्र में ले जाने के लिए धोखा देता है।

कई मसीही युवा जो इस बात से अनभिज्ञ हैं, वे न तो परमेश्वर से डरते हैं और न ही पवित्र शास्त्र की "अपनी युवावस्था के दिनों में अपने सृजनहार को याद रख" बात पर ध्यान देते हैं और इस दृष्टिकोण के तहत रहते हैं कि "युवा दिन दुनिया के सुखों का आनंद लेने के लिए हैं; यदि अभी नहीं तो, तो कब।" इस लेख का उद्देश्य उनके लिए वचनों पर प्रकाश डालकर उन्हें जागरूक करना है।

जो लोग पवित्र वचनों के अनुसार पवित्र जीवन जी कर मरते हैं वे स्वर्ग जाते हैं, और जो लोग पाप करके मरते हैं वे नरक में जाते हैं। जैसे स्वर्ग वास्तविक है, वैसे ही नर्क 100% वास्तविक है। आप इंटरनेट पर देख सकते हैं कि कई वैज्ञानिकों ने जांच की है और नरक के अस्तित्व का प्रमाण पाया है।

कुछ लोगों का तर्क है कि यदि परमेश्वर मनुष्यों के प्रति इतना दयालु हैं, तो उन्होंने उनके लिए नर्क क्यों बनाया? हमारे दयालु और अनुग्रहकारी परमेश्वर हमसे बहुत प्रेम करते हैं। निःसंदेह, यह परमेश्वर ही थे जिसने नर्क को बनाया। लेकिन उन्होंने इसे इंसानों के लिए नहीं बनाया। उन्होंने इसे शैतान और उसके स्वर्गदूतों के लिए बनाया (मत्ती 25:41)।

परमेश्वर, पृथ्वी और मानवता का निर्माण करने से पहले, केवल स्वर्गदूतों के साथ स्वर्ग में रहते थे। तब लूसीफ़र, एक स्वर्गदूत, ने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया और शैतान का रूप धारण कर लिया। उसके पीछे चलने वाले कई स्वर्गदूत भी शैतान बन गये। इसलिए, नरक उनके लिए बनाया गया स्थान था, न कि मानव जाति के लिए। परमेश्वर को अपने लोगों का नरक में जाना पसंद नहीं है, जिन्हें उसने अपनी छवि और समानता में बनाया है।

"प्रभु यहोवा की यह वाणी है, क्या मैं दुष्ट के मरने से कुछ भी प्रसन्न होता हूँ? क्या मैं इससे प्रसन्न नहीं होता कि वह अपने मार्ग से फिरकर जीवित रहे?" (यहेजकेल 18:23), वह नरक की ओर जाने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए रोते हुए पूछते हैं।

हालाँकि, जो लोग परमेश्वर और उनकी आज्ञाओं की उपेक्षा करते हैं और शैतान का अनुसरण करते हैं, उसके कामों से सहमत होते हैं, वे भी उसके समान ही पीड़ा में पहुँचेंगे।

ठीक है दोस्तों, अगले कुछ महीनों में, हम इस भाग में सांसारिक सुखों की सूची देखना जारी रखेंगे जिन्हें शैतान हमें नरक में ले जाने के लिए हमें लुभाने, धोखा देने और पाप करवाने की पेशकश करता है, और हम नरक की इस निंदा से कैसे बच सकते हैं।

NISUIN BERIYTH

विवाह की वाचा

क्या आप सोच रहे हैं कि "निसुइन बेरीथ" का वास्तव में क्या मतलब है?

यह शब्द इब्रानी भाषा में विवाह की वाचा को संदर्भित करने के लिए उपयोग किया जाता है। विवाह एक सामाजिक और कानूनी संस्था है जहां एक पुरुष और एक महिला एक परिवार बनाने के लिए एक वाचा में एक साथ आते हैं। जैसा कि आप अपना शेष जीवन किसी के साथ बिताना चुन रहे हैं, शादी हर किसी के जीवन में एक महत्वपूर्ण निर्णय है। कई जोड़े जो खुशी-खुशी अपनी शादी के दिन शादी के बंधन में बंध जाते हैं, उनकी शादी टिक नहीं पाती। इस आधुनिक युग में, बहुत से लोग विवाह के मूल्य और गंभीरता को समझने में असफल होकर, छोटे-छोटे कारणों से अपना जीवन बर्बाद कर लेते हैं। तलाक एक लोकप्रिय विकल्प बन गया है जिसे कई लोग स्वार्थ और परिणामों की अज्ञानता के कारण अपनाते हैं। इस लेख का उद्देश्य परमेश्वर के उन सभी बच्चों के लिए विवाह की पवित्रता के बारे में जानकारी देना है जिनकी अभी तक शादी नहीं हुई है।

पहली शादी

प्रभु ने आदम को अदन की वाटिका में अकेले रहते हुए देखा और निर्णय लिया ‘मनुष्य के लिए अकेला रहना अच्छा नहीं है; मैं उसके लिए एक सहायक बनाऊंगा’ (उत्पत्ति 2:18)। मनुष्य स्वभावतः अपने शरीर से प्रेम करता है। शायद अगर उसके शरीर पर चोट लगी हो तो उसका दुख और दर्द सिर्फ वही महसूस कर सकता है। जब यह ठीक हो जाएगा, तो वह उपचार प्रक्रिया को भी समझने वाला व्यक्ति होगा। इसलिए, परमेश्वर ने आदम की पसली ली और उसमें से एक स्त्री बनाई (उत्पत्ति 2:21-22)। इसीलिए आदम हव्वा को “मेरी हड्डियों में से हड्डी और मेरे मांस में से मांस” के रूप में संदर्भित करता है। बाइबल कहती है कि वे एक तन बन जाएंगे।

विवाह: दो दिलों का मिलन

‘परमेश्वर के हाथ ने उन्हें एकता प्रदान की’ (2इतिहास 30:12)। जैसा कि बाइबल का यह पद कहता है, जब विवाह की शुरुआत परमेश्वर द्वारा की जाती है, तो उनके हाथ पति और पत्नी के बीच एकता लाते हैं।

मसीही विवाह

मसीही और गैर-मसीही शादियों के बीच मुख्य अंतर यह है कि मसीही शादियों में विवाह का

केंद्र यीशु मसीह होते हैं। जब जोड़ा यीशु मसीह की तरह जीने का फैसला करता है, तो यह उन्हें एक सुंदर मसीही परिवार में आकार देता है।

जैसा कि सभोपदेशक 4:12 में कहा गया है कि 'तीन धागों की डोरी जल्दी नहीं टूटती', जब एक पति और पत्नी मसीह के साथ एकजुट होते हैं, तो बंधन अटूट होता है। यह परमेश्वर की इच्छा है कि पति, पत्नी और उनके दोनों परिवार सदैव सुखी रहें।

विवाह दिव्य है

आमतौर पर, युवाओं की शरीर और आंखों की लालसा उन्हें दूसरे लिंग के लोगों के साथ बातचीत करने के लिए उत्साहित करती है। यह लोगों को परमेश्वर, अपने माता-पिता या अन्य बड़ों से सलाह लिए बिना अपनी शादी के बारे में निर्णय लेने वाला बना सकता है। अंत में, वे अपनी शांति और खुशी खो देते हैं और अलग होने का फैसला करते हैं।

मैं एक युवा लड़की के बारे में एक कहानी जानता हूं जिसने परमेश्वर से इस तरह प्रार्थना की: "प्रिय परमेश्वर, मैं अपने लिए एक आदर्श जीवन साथी चुनने में इतनी बुद्धिमान नहीं हूं! मुझे उस व्यक्ति से मिला दें जिससे आपने मुझे बनाने के लिए पसली ली थी।" उसने निर्णय लिया कि उसके माता-पिता जिससे भी उसकी शादी कराना चाहेंगे, यह परमेश्वर की इच्छा होगी।

जैसे ही उसने प्रार्थना की, उसने उस व्यक्ति से शादी कर ली जिसे उसके माता-पिता ने चुना था। वर्षों बाद, उसने अपने दोस्तों के साथ एक गवाही साझा की कि उसका पति परमेश्वर द्वारा भेजी गई दूसरी माँ है। वह अपने पति में माँ का प्रेम देख पा रही थी। जब उसने नौकरी के लिए प्रार्थना की ताकि वह अपने पति के साथ परिवार का बोझ साझा कर सके,

तो परमेश्वर ने उसे केंद्र सरकार की नौकरी दे दी। जब उन्होंने एक बच्चे के लिए प्रार्थना की, तो परमेश्वर ने उन्हें जुड़वां बच्चों का भरपूर आशीर्वाद दिया। देखें अनेक गुना आशीष! उनका घर स्वर्ग का एक छोटा सा टुकड़ा बन गया।

आइए आगामी सप्ताहों में निसुइन बेरीथ में दिलचस्प घटनाओं को देखना जारी रखें।

अपने परमेश्वर को जाने

परमेश्वर हमारी ढाल है

परमेश्वर के बारे में भाषण देने का अवसर मिले तो हम अवश्य ही एक भाषण देंगे। हम उनका कई तरह से वर्णन और प्रशंसा करेंगे, जैसे कि, "वह अच्छे हैं! शक्तिशाली हैं! पर्याप्त हैं! शरणस्थान हैं! किला हैं!" लेकिन क्या हमने अपने व्यक्तिगत जीवन में ऐसे व्यक्तित्वों में परमेश्वर का अनुभव किया है?

यदि आप कहते हैं, "मैंने वचनों में इनके बारे में कई बार पढ़ा है, लेकिन अपने निजी जीवन में कभी परमेश्वर के कार्य का अनुभव नहीं किया है," तो यह लेख आपको ऐसा करने के लिए प्रेरित करेगा। परमेश्वर इस वर्ष एक नए नाम के तहत एक नए आयाम में स्वयं को आपके सामने प्रकट करें!

यह दूसरे विश्व युद्ध के दौरान था कि जर्मनी का तानाशाह हिटलर 1939 से 1945 तक अन्य देशों के साथ युद्ध कर रहा था। इन युद्धों में लगभग 50-56 मिलियन लोगों ने अपनी जान गंवाई थी। आइए देखें कि परमेश्वर ने ऐसे वातावरण में विलियम नाम के 21 वर्षीय युवक की रक्षा कैसे की।

कॉर्पोरल विलियम डेवर्स, एक युवा अमेरिकी नौसैनिक, स्वयं को अज्ञेयवादी मानता था। उसने वहां के पादरी या अपने साथी सैनिकों से परमेश्वर के बारे में किसी भी विचार का विरोध किया।

उनकी पहली लड़ाई में, उनके कई साथी मारे गए, जिनमें वहाँ का पादरी भी शामिल था। लेकिन इससे पहले कि पादरी मौत का शिकार हो जाए, उसने विलियम को बुलाया। उसने उसे बाइबल को अपनी जेब में रखने का अनुरोध किया और कहा कि विलियम इसे अपने पास रखे।

"कल रात मैंने एक सपना देखा। सपने में एक दूत प्रकट हुआ और उसने मुझसे कहा कि मुझे तुम्हें बाइबल अपने साथ लेने को कहना है। इसे ले लो, बेटा, कृपया।" विलियम ने पादरी को खुश करने के लिए बाइबल ली और अपनी शर्ट की जेब में रख ली।

कुछ मिनट बाद, विलियम के दल को हमलों की एक और लहर का सामना करना पड़ा। विलियम को गोली मार दी गई। उसने सोचा कि वह मरने वाला है क्योंकि उसे अपने सीने में दर्द महसूस हुआ। लेकिन उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि वहां कोई खून नहीं था। उसकी जेब में रखी बाइबल ने गोली को सोख लिया, जिससे विलियम की जान बच गई। जब उसने बाइबल ली, तो उसने देखा कि गोली का अंत भजन 91:7 पर है, जो कहता है, "एक हजार तेरी ओर गिरेंगे, दस हजार तेरी दाहिनी ओर, परन्तु वह तेरे निकट न आएगा।"

जिन वचनों से उसे नफरत थी, उन्होंने ढाल की तरह उसकी रक्षा की। उस दिन उसे फिर से जीने का एक और मौका मिला, उसने यीशु को अपने उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार किया, 83 वर्ष की उम्र तक जीवित रहा, और अपनी गवाही के माध्यम से कई लोगों को प्रभु तक पहुंचाया। विलियम की गवाही आज की पीढ़ी के लिए भी सच है।

पवित्रशास्त्र में, हम देखते हैं कि 2शमूएल 22:1-4 में परमेश्वर ने दाऊद की रक्षा कैसे की। वह परमेश्वर जिसने दाऊद की रक्षा की, वह परमेश्वर जिसने विलियम डेवर्स की रक्षा की, निश्चित रूप से अपने पंखों के नीचे आपकी रक्षा करेंगे। परमेश्वर स्वयं एक ढाल बनेगे और शत्रु शैतान द्वारा आप पर फेंके जाने वाले सभी उग्र तीरों से आपकी रक्षा करेगा। आइए हम वचनों को अपने हृदय की पट्टियों पर रखें, उन्हें प्रतिदिन पढ़ें, उनसे प्रेम करें और उन्हें स्वीकार करें। परमेश्वर आपकी और आपके परिवार की रक्षा करें!

विचार करने के लिए:

क्या आपने अपने खतरनाक समय में यीशु की ओर देखा है? मृत्यु की कगार पर खड़े पादरी ने अपनी बाइबल देकर एक व्यक्ति की जान बचाई। क्या आपने अपने दोस्तों को इस जीवित शब्द के बारे में बताया है?